A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

युवा पीढ़ी में ठुमरी के प्रति रुचि: एक सांस्कृतिक अध्ययन

Gurjit singh
Independent Researcher (Music), Reasi , jammu & Kashmir,India

Read the Article Online

OPEN ACCESS

Cite this Article

Published on 30 April, 2026

Singh, G. (2026). yuva pidhi mein thumri ke prati ruchi: ek sanskritik adhyayan. Swar Sindhu, 14(1), 111-114.

सार

प्रस्तुत शोध पत्र "युवा पीढ़ी में ठुमरी के प्रति रुचि : एक सांस्कृतिक अध्ययन" में भारतीय शास्त्रीय संगीत की महत्वपूर्ण गायन शैली ठुमरी के वर्तमान स्वरूप एवं युवा पीढ़ी में उसकी लोकप्रियता का अध्ययन किया गया है। ठुमरी भारतीय सांस्कृतिक विरासत की एक भावप्रधान शैली है, जिसमें प्रेम, भक्ति, श्रृंगार एवं लोकभावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। आधुनिक समय में पाश्चात्य एवं फिल्म संगीत के बढ़ते प्रभाव के कारण युवाओं की संगीत रुचियों में परिवर्तन आया है, फिर भी अनेक युवा कलाकार एवं संगीत विद्यार्थी ठुमरी के प्रति रुचि प्रदर्शित कर रहे हैं। इस शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि डिजिटल माध्यमों, सोशल मीडिया, यूट्यूब तथा ऑनलाइन संगीत शिक्षा ने ठुमरी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फ्यूजन संगीत एवं आधुनिक प्रस्तुतियों के माध्यम से ठुमरी को नई पहचान प्राप्त हो रही है। साथ ही शोध में ठुमरी के संरक्षण की आवश्यकता, पारंपरिक संगीत के समक्ष चुनौतियों तथा शिक्षा एवं मीडिया की भूमिका का भी अध्ययन किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि आधुनिक तकनीकों एवं सांस्कृतिक प्रयासों के माध्यम से ठुमरी को युवा पीढ़ी के बीच पुनः लोकप्रिय बनाया जा सकता है तथा भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखा जा सकता है।

***मुख्य शब्द**: ठुमरी, युवा पीढ़ी, भारतीय शास्त्रीय संगीत, डिजिटल माध्यम, सांस्कृतिक विरासत*

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत विश्व की प्राचीन एवं समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसकी विभिन्न गायन शैलियों में ठुमरी एक अत्यंत लोकप्रिय एवं भावप्रधान शैली मानी जाती है। ठुमरी का विकास मुख्यतः लखनऊ और बनारस घरानों में हुआ तथा इसमें प्रेम, विरह, भक्ति एवं श्रृंगार जैसे भावों की सुंदर अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। यह गायन शैली अपनी मधुरता, लयात्मकता और भावपूर्ण प्रस्तुति के कारण श्रोताओं को विशेष रूप से आकर्षित करती है। वर्तमान समय में संगीत के क्षेत्र में अनेक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। आधुनिक तकनीक, सोशल मीडिया, पाश्चात्य संगीत तथा फिल्मी संगीत के प्रभाव के कारण युवाओं की संगीत रुचियों में भी परिवर्तन आया है। आज की युवा पीढ़ी तेज गति और मनोरंजन प्रधान संगीत की ओर अधिक आकर्षित हो रही है, जिसके कारण पारंपरिक शास्त्रीय संगीत की लोकप्रियता कुछ हद तक प्रभावित हुई है। इसके बावजूद अनेक युवा कलाकार, संगीत विद्यार्थी तथा संगीत प्रेमी ठुमरी जैसी पारंपरिक विधाओं में रुचि दिखा रहे हैं। यूट्यूब, इंस्टाग्राम तथा ऑनलाइन संगीत शिक्षा जैसे डिजिटल माध्यमों ने ठुमरी को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वर्तमान शोध पत्र में युवा पीढ़ी में ठुमरी के प्रति रुचि, उसके सांस्कृतिक महत्व तथा आधुनिक समय में उसकी स्थिति का अध्ययन किया गया है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इस अध्ययन में युवा पीढ़ी में ठुमरी के प्रति रुचि तथा उसके सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करने के लिए विभिन्न स्रोतों से सामग्री संकलित की गई है। शोध कार्य हेतु भारतीय शास्त्रीय संगीत से संबंधित पुस्तकों, शोध पत्रों, संगीत पत्रिकाओं तथा प्रकाशित लेखों का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त इंटरनेट एवं डिजिटल माध्यमों से प्राप्त जानकारी का भी उपयोग किया गया है। इस शोध में वर्तमान समय में युवाओं की संगीत संबंधी रुचियों, उनकी पसंद तथा पारंपरिक संगीत के प्रति दृष्टिकोण का सामान्य अवलोकन किया गया है। साथ ही यह समझने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक तकनीक, सोशल मीडिया एवं ऑनलाइन संगीत मंचों ने ठुमरी के प्रचार-प्रसार में किस प्रकार योगदान दिया है। अध्ययन के आधार पर प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करके निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

शोध के उद्देश्य

- युवा पीढ़ी में ठुमरी के प्रति रुचि का अध्ययन करना तथा उनकी संगीत संबंधी सोच को समझना।

- ठुमरी की लोकप्रियता को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारणों का अध्ययन करना।
- डिजिटल माध्यमों एवं सोशल मीडिया की भूमिका को समझना, जिन्होंने युवाओं तक ठुमरी को पहुँचाने में सहायता की है।
- ठुमरी के संरक्षण एवं प्रचार के लिए उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।

ठुमरी का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिचय

ठुमरी हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक महत्वपूर्ण उपशास्त्रीय गायन शैली है। इसकी उत्पत्ति का निश्चित समय ज्ञात नहीं है, किंतु माना जाता है कि इसका विकास ध्रुपद, धमार, ख्याल एवं टप्पा जैसी गायन शैलियों के प्रचलन के बाद 18वीं शताब्दी के अंत एवं 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ। ठुमरी मुख्यतः श्रृंगार रस प्रधान शैली है, जिसमें राधा-कृष्ण के संयोग-वियोग, प्रेम एवं भावनात्मक अभिव्यक्ति का विशेष महत्व होता है। ठुमरी के विकास में अवध के नवाब वाजिद अली शाह का महत्वपूर्ण योगदान माना जाता है। वे स्वयं संगीत प्रेमी एवं कुशल कलाकार थे तथा उन्होंने अनेक ठुमरियों की रचना की। कुछ विद्वान उस्ताद सादिक अली खां को ठुमरी का वास्तविक प्रवर्तक मानते हैं। कहा जाता है कि वाजिद अली शाह एवं 'कदर पिया' ने भी सादिक अली खां से ठुमरी की शिक्षा प्राप्त की थी। इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों ने लखनऊ के प्रसिद्ध संगीतज्ञ शोरी मियां को भी ठुमरी का प्रारंभिक प्रवर्तक माना है। ठुमरी मुख्यतः तीन अंगों में गायी जाती है— लखनऊ अंग, बनारस अंग एवं पंजाब अंग। लखनऊ और बनारस की ठुमरी को पूर्व अंग तथा पंजाब की ठुमरी को पश्चिमी अंग कहा जाता है। लखनऊ अंग में नजाकत, भावुकता एवं अलंकारों की प्रधानता होती है, जबकि बनारस अंग अधिक भावपूर्ण एवं लोक प्रभाव से युक्त माना जाता है। इन सभी अंगों ने ठुमरी को भारतीय संगीत में विशेष स्थान प्रदान किया है।

युवा पीढ़ी और संगीत की बदलती प्रवृत्तियाँ

वर्तमान समय में युवा पीढ़ी की संगीत रुचियों में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। तकनीकी विकास, सोशल मीडिया तथा वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण आधुनिक संगीत युवाओं के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हो गया है। आज के युवा पॉप, रैप, हिप-हॉप, इंडी तथा इलेक्ट्रॉनिक संगीत को अधिक सुनना पसंद करते हैं। वर्ष 2023 की IFPI (International Federation of the Phonographic Industry) की रिपोर्ट के अनुसार विश्वभर में सबसे अधिक सुना जाने वाला संगीत पॉप और फिल्म संगीत रहा, जिसमें युवाओं की भागीदारी सबसे अधिक पाई गई। पाश्चात्य एवं फिल्म संगीत की बढ़ती लोकप्रियता ने भारतीय पारंपरिक संगीत पर भी प्रभाव डाला है। तेज लय, आधुनिक वाद्ययंत्रों तथा डिजिटल प्रस्तुति के कारण युवा वर्ग फिल्मी और पाश्चात्य संगीत की ओर अधिक आकर्षित हो रहा है। भारत में इंटरनेट और स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं की संख्या 80 करोड़ से अधिक होने के कारण यूट्यूब, स्पॉटिफाई तथा इंस्टाग्राम जैसे मंच युवाओं की संगीत पसंद को प्रभावित कर रहे हैं। इसके कारण शास्त्रीय संगीत की पारंपरिक शैलियाँ सीमित वर्ग तक रह गई हैं। हालाँकि शास्त्रीय संगीत के प्रति युवाओं का दृष्टिकोण पूरी तरह नकारात्मक नहीं है। संगीत संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अनेक युवा भारतीय शास्त्रीय संगीत और ठुमरी सीखने में रुचि दिखा रहे हैं। आईआईटी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय तथा प्रयाग संगीत समिति जैसे संस्थानों में आज भी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा के प्रति युवाओं का आकर्षण बना हुआ है। डिजिटल माध्यमों एवं ऑनलाइन संगीत शिक्षा ने भी युवाओं को शास्त्रीय संगीत से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिकता के प्रभाव के बावजूद भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति युवाओं में रुचि अभी भी विद्यमान है।

युवा पीढ़ी में ठुमरी के प्रति रुचि

वर्तमान समय में आधुनिक संगीत के बढ़ते प्रभाव के बावजूद युवा पीढ़ी में ठुमरी के प्रति रुचि पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। अनेक संगीत शिक्षण संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा सांस्कृतिक अकादमियों में आज भी ठुमरी को शास्त्रीय संगीत की महत्वपूर्ण शैली के रूप में सिखाया जाता है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, भातखंडे संगीत संस्थान लखनऊ तथा प्रयाग संगीत समिति जैसे संस्थानों में ठुमरी गायन का नियमित प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि शैक्षणिक स्तर पर ठुमरी की परंपरा आज भी जीवित है। युवा कलाकारों की भागीदारी भी ठुमरी के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। कई युवा गायक एवं गायिकाएँ शास्त्रीय संगीत समारोहों, संगीत प्रतियोगिताओं तथा ऑनलाइन मंचों पर ठुमरी प्रस्तुत कर रहे हैं। यूट्यूब एवं इंस्टाग्राम जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर युवा कलाकारों द्वारा प्रस्तुत ठुमरी वीडियो लाखों दर्शकों तक पहुँच रहे हैं, जिससे नई पीढ़ी में इसके प्रति रुचि बढ़ रही है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं संगीत महोत्सवों में भी ठुमरी की उपस्थिति देखने को मिलती है। सवाई गंधर्व संगीत महोत्सव, तानसेन समारोह तथा गंगा महोत्सव जैसे कार्यक्रमों में ठुमरी गायन को विशेष स्थान दिया जाता है। इन आयोजनों के माध्यम से युवा वर्ग भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं ठुमरी की परंपरा से परिचित हो रहा है। युवाओं में ठुमरी के प्रति जागरूकता बढ़ाने में डिजिटल माध्यमों,

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 14, Issue 01, January-June, 2026

ऑनलाइन संगीत शिक्षा तथा सांस्कृतिक मंचों का विशेष योगदान है। यद्यपि आधुनिक संगीत की तुलना में ठुमरी की लोकप्रियता सीमित है, फिर भी भारतीय सांस्कृतिक विरासत के प्रति बढ़ती रुचि के कारण अनेक युवा इसे सीखने और समझने का प्रयास कर रहे हैं। इससे स्पष्ट होता है कि बदलते समय में भी ठुमरी का सांस्कृतिक महत्व बना हुआ है।

डिजिटल माध्यमों की भूमिका

वर्तमान डिजिटल युग में सोशल मीडिया एवं ऑनलाइन मंचों ने ठुमरी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक तथा स्पॉटिफाई जैसे डिजिटल माध्यमों के कारण आज युवा वर्ग आसानी से भारतीय शास्त्रीय संगीत और ठुमरी तक पहुँच पा रहा है। भारत में वर्ष 2024 तक इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 90 करोड़ से अधिक हो चुकी है, जिसके कारण डिजिटल मंच संगीत सीखने और सुनने का प्रमुख माध्यम बन गए हैं। यूट्यूब एवं इंस्टाग्राम पर अनेक युवा कलाकार ठुमरी की प्रस्तुतियाँ साझा कर रहे हैं। "**काहे को ब्याही बिदेस**" और "**बाबुल मोरा**" जैसी प्रसिद्ध ठुमरियों की प्रस्तुतियों को यूट्यूब पर लाखों बार देखा गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल माध्यमों ने ठुमरी को नई पीढ़ी तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। ऑनलाइन संगीत शिक्षा ने भी ठुमरी के प्रसार में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। आज अनेक संगीत संस्थान एवं कलाकार ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से ठुमरी सिखा रहे हैं। कोविड-19 महामारी के बाद ऑनलाइन संगीत शिक्षा में लगभग 40% वृद्धि दर्ज की गई, जिससे शास्त्रीय संगीत सीखने वाले युवाओं की संख्या में भी वृद्धि हुई। वर्तमान समय में फ्यूजन संगीत के माध्यम से भी ठुमरी को आधुनिक रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। कई संगीत समूह पारंपरिक ठुमरी को जैज़, सूफी, रॉक तथा स्वतंत्र संगीत के साथ जोड़कर नई शैली में प्रस्तुत कर रहे हैं। "इंडियन ओशन" तथा "द रघु दीक्षित प्रोजेक्ट" जैसे प्रसिद्ध संगीत समूह भारतीय लोक एवं शास्त्रीय संगीत के तत्वों को आधुनिक फ्यूजन संगीत में प्रयोग करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर एवं मालिनी अवस्थी ने भी ठुमरी और लोक संगीत को आधुनिक मंचों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रकार डिजिटल माध्यमों, सोशल मीडिया तथा फ्यूजन संगीत ने ठुमरी को केवल संरक्षित ही नहीं किया, बल्कि उसे नई पीढ़ी के बीच पुनः लोकप्रिय बनाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

चुनौतियाँ

वर्तमान समय में ठुमरी जैसी पारंपरिक शास्त्रीय संगीत विधाओं के समक्ष अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। आधुनिक एवं पाश्चात्य संगीत के बढ़ते प्रभाव के कारण युवा पीढ़ी का झुकाव तेज लय एवं मनोरंजन प्रधान संगीत की ओर अधिक हो गया है। इसके कारण ठुमरी की लोकप्रियता सीमित होती जा रही है। शास्त्रीय संगीत को सीखने में लंबे समय, निरंतर अभ्यास तथा धैर्य की आवश्यकता होती है, जबकि आज की युवा पीढ़ी त्वरित मनोरंजन की ओर अधिक आकर्षित है। डिजिटल मंचों पर भी व्यावसायिक संगीत को अधिक महत्व दिया जाता है, जिससे ठुमरी जैसी पारंपरिक विधाओं को अपेक्षाकृत कम स्थान मिल पाता है। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में शास्त्रीय संगीत शिक्षा को पर्याप्त महत्व न मिलने के कारण भी युवाओं में इसके प्रति जागरूकता कम दिखाई देती है। इसके अतिरिक्त अनेक युवा कलाकारों को उचित मंच, आर्थिक सहयोग एवं प्रोत्साहन नहीं मिल पाता, जिससे वे इस क्षेत्र में आगे बढ़ने में कठिनाई अनुभव करते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं पारंपरिक संगीत समारोहों की संख्या में कमी भी ठुमरी के संरक्षण में बाधा उत्पन्न करती है। साथ ही नई पीढ़ी में ठुमरी के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व के प्रति सीमित जानकारी होने के कारण इसकी लोकप्रियता प्रभावित हो रही है। इसलिए ठुमरी के संरक्षण एवं प्रचार के लिए शिक्षा, मीडिया तथा सांस्कृतिक संस्थाओं के संयुक्त प्रयासों की आवश्यकता है।

ठुमरी के संरक्षण की आवश्यकता

ठुमरी भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक महत्वपूर्ण एवं भावप्रधान गायन शैली है, जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत का अमूल्य भाग मानी जाती है। इसमें प्रेम, भक्ति, श्रृंगार एवं लोकभावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। वर्तमान समय में आधुनिक एवं पाश्चात्य संगीत के बढ़ते प्रभाव के कारण पारंपरिक संगीत शैलियों के सामने अनेक चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। युवा पीढ़ी का झुकाव तेज लय और मनोरंजन प्रधान संगीत की ओर अधिक होने के कारण ठुमरी जैसी शास्त्रीय विधाओं की लोकप्रियता सीमित होती जा रही है। डिजिटल युग में जहाँ आधुनिक संगीत आसानी से उपलब्ध है, वहीं शास्त्रीय संगीत को समझने और सीखने में अधिक समय एवं अभ्यास की आवश्यकता होती है। संगीत विशेषज्ञों के अनुसार पिछले कुछ वर्षों में शास्त्रीय संगीत सुनने वाले श्रोताओं की संख्या में कमी देखी गई है, जिससे ठुमरी जैसी पारंपरिक शैलियों के संरक्षण की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। ठुमरी केवल एक संगीत शैली नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, भाषा, साहित्य और भावनात्मक अभिव्यक्ति का प्रतीक भी है। इसके माध्यम से भारतीय समाज की सांस्कृतिक परंपराएँ एवं लोकभावनाएँ जीवित रहती हैं। इसलिए इसका संरक्षण भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के समान है। ठुमरी के संरक्षण एवं प्रचार के लिए निम्न उपाय महत्वपूर्ण हो सकते हैं—

- विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शास्त्रीय संगीत शिक्षा को बढ़ावा देना।
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं संगीत महोत्सवों में ठुमरी को अधिक स्थान देना।
- सोशल मीडिया एवं डिजिटल मंचों के माध्यम से ठुमरी का प्रचार करना।
- युवा कलाकारों को मंच एवं प्रोत्साहन प्रदान करना।
- ऑनलाइन संगीत शिक्षा एवं कार्यशालाओं का आयोजन करना।

शिक्षा एवं मीडिया भी ठुमरी के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। दूरदर्शन, आकाशवाणी, यूट्यूब तथा अन्य डिजिटल मंचों के माध्यम से ठुमरी को नई पीढ़ी तक पहुँचाया जा सकता है। इससे युवाओं में भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति रुचि बढ़ेगी तथा हमारी सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित रह सकेगी।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ठुमरी भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक महत्वपूर्ण एवं भावप्रधान गायन शैली है, जिसका भारतीय संस्कृति में विशेष स्थान है। आधुनिक एवं पाश्चात्य संगीत के बढ़ते प्रभाव के बावजूद युवा पीढ़ी में ठुमरी के प्रति रुचि पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है। संगीत संस्थानों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा डिजिटल माध्यमों के कारण युवा वर्ग धीरे-धीरे शास्त्रीय संगीत की ओर आकर्षित हो रहा है। इस शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि यूट्यूब, सोशल मीडिया, ऑनलाइन संगीत शिक्षा तथा फ्यूजन संगीत ने ठुमरी को नई पहचान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यदि शिक्षा, मीडिया एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ मिलकर कार्य करें, तो ठुमरी जैसी पारंपरिक संगीत शैलियों का संरक्षण और प्रचार प्रभावी रूप से किया जा सकता है। भविष्य में डिजिटल मंचों एवं आधुनिक तकनीकों के माध्यम से ठुमरी को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान मिल सकती है। इससे भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने में सहायता मिलेगी।

सन्दर्भ

ठाकुर जयदेव सिंह, ठुमरी का विकास, संगीत कला विहार, मई 1991, पृष्ठ 99
भारती राठौड़, ठुमरी, यूनिवर्सिटी बुक हाउस, जयपुर, 2005, पृष्ठ 5-6
शरच्चंद्र शुक्ल, ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ, द्वितीय संस्करण, हिंदी विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, 1991, पृष्ठ 48-49
डॉ. एस. के. चौबे, द लखनऊ ठुमरी, उत्तर प्रदेश, दिसंबर 1957
IFPI Global Music Report, 2023, “Music Listening Trends among Youth”, पृष्ठ 15-18
“भारतीय शास्त्रीय संगीत और युवा पीढ़ी”, संगीत पत्रिका, अंक 27, जुलाई 2021, पृष्ठ 25-30
तानसेन समारोह एवं सवाई गंधर्व संगीत महोत्सव से संबंधित सांस्कृतिक लेख, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार,
“कोविड-19 के बाद ऑनलाइन संगीत शिक्षा की प्रवृत्तियाँ”, संगीत शिक्षा जर्नल, 2022, पृष्ठ 14-18